हिंदी आलोचना

विषय	हिन्दी
प्रश्नपत्र सं. एवं शीर्षक	P1 हिंदी आलोचना
इकाई सं. एवं शीर्षक	M1 आचार्य रामचंद्र शुक्ल
इकाई टैग	HINDI – P1 M1 [VI SEM-HONS]
प्रधान निरीक्षक	डॉ० कुसुम राय
प्रश्नपत्र –संयोजक	पूजा गुप्ता
इकाई –लेखक	पूजा गुप्ता
इकाई– समीक्षक	डॉ० कुसुम राय
भाषा – सम्पादक	पूजा गुप्ता

पाठ का प्रारूपः

इकाई 1. पाठ का उद्देश्य

इकाई 2. प्रस्तावना

इकाई 3. आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल

इकाई 4. आचार्य रामचंद्र शुक्ल की आलोचना दृष्टि

इकाई 5. भाषा शैली

पाठ का उद्देश्यः

शुक्ल युग मे साहित्य की कसौटी किस प्रकार बदली, यह जान पाएंगे तथा हिंदी आलोचना में आचार्य शुक्ल के योगदान को समझ पाएंगे।

प्रस्तावनाः

हिंदी में आलोचना का आरंभ और विकास आधुनिक युग मे ही हुआ । रीतिकाल मे इस दिशा में हुए प्रयास ना होकर संस्कृत काव्यशासतृ की पुनरावृति ही है । आचार्य शुक्ल ने ना केवल हिंदी आलोचना का व्यवस्थित रूप निमित किया बल्कि उसे मौलिक तथा लोक संवेदना से संपन्न दृष्टि भी विकसित की ।

आलोचक रामचंद्र शुक्ल

हिंदी के इस प्रतिभासंपन साहित्यकार का जन्म उत्तर प्रदेश के बसती नामक जिले मे हुआ। आचार्य शुक्ल न केवल आलोचक बल्कि निबंधकारए साहितयेतिहासकारए कोशकारए अनुवादक, कथाकार एवं कवि भी थें। आलोचना का आरंभ भारतेंदु युग से ही हो चुका था पर उसे वैज्ञानिक बनाने का श्रेय आचार्य रामचंद्र शुक्ल (1884–1941) को जाता है । शुक्ल जी हिंदी के पहले आलोचक हैं जिन्होंने भारतीय एवं पाश्चात्य आलोचना का समन्वय किया । एक ओर तो वे प्राचीन भारतीय रसवाद के समर्थ थें तो दूसरी ओर पाश्चात्य आलोचना के मनोविज्ञानिक पक्ष के पोषक थें । वे कवियों की विशेषताओं और उनके अतःप्रवृतियों की छानबीन करते हैं । उन्होंने सुर, तुलसी, जायसी पर समालोचनाएं लिखी है ।

आचार्य शुक्ल की आलोचना दृष्टि

1) आचार्य शुक्ल रसवादी आलोचक माने जाते हैं । कविता में रस की अनिवार्यता स्वीकार करते हुए कहते हैं ‘जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावसथा ग्यानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावसथा रसदशा कहलाती है।
2) आचार्य शुक्ल यद्यपि रसवादी आचार्य थें किंतु उन्होंने भारतीय एवं पाश्चात्य आलोचना पद्धतियों का समन्वय कर उसको एक व्यापक आधार प्रदान किया।
3) उन्होंने किसी कृति की समीक्षा में तत्कालीन परिस्थितियों, पूर्ववर्ती साहित्यिक परंपरा, मूल विचारधारा, भावपक्ष, कलापक्ष पर भी विचार करना आवश्यक माना है।
4) आचार्य शुक्ल जी की आलोचना पद्धति में हृदय और बुद्धि का सुंदर समन्वय दिखायी पड़ता है। वे हास्य. व्यंग्य के माध्यम से अपनी आलोचना को सरस बनाते हैं। बिहारी की नायिका को वे घड़ी की पेंडुलम कहतें हैं।
5) शुक्ल जी एक सच्चे आलोचक की भांति गुण. दोषों पर समान दृष्टि रखते हैं। काव्य रचना के सभी पक्षों पर विचार करते हैं।
6) आचार्य शुक्ल की आलोचना का आधार मनोभाव तथा उनका मनोवैज्ञानिक विशलेषण था।

भाषा.शैली

भाषा – आचार्य शुक्ल जी की भाषा तत्सम शब्दों से युक्त शुद्ध, परिमार्जित खड़ी बोली है। आपकी भाषा आडम्बर रहित विषय के अनुरूप है, इसलिए कहीं. कहीं वह क्लिष्ट हो गई है । सामान्यतया आपकी भाषा सरसण्सजीव एवं स्वाभाविक है । मुहावरों और खड़ी बोली के प्रयोग से भाषा रोचक बन गई है। आपकी भाषा पूर्णतः व्याकरण सम्मत है । भाषा प्रवाह पूर्ण एवं सूक्तियों से ओत. प्रोत है। जैसे ''बैर क्रोध का आचार और मुरब्बा है''।

शैली – शुक्ल जी शैलियों के सर्जक माने जाते हैं। शुक्ल जी ने प्रमुख रूप से समास शैली , व्यास शैली, वर्णनात्मक शैली , सूत्रात्मक शैली, समीक्षात्मक शैली और गवेषणात्मक शैली को अपनाया है। इसके अतिरिक्त हास्य.विनोद और व्यंग्य प्रधान शैली का भी प्रयोग किया है।